मिलजुल कर चलता जब समस्त परिवार,
दुख रह जाते दो,
और सुख हो जाते खुद ब खुद चार।
एक छोटा और सुखी परिवार आज सबकी यही चाह,
कई मानते इसे गलत,
ता कही ज़िदंगीयों कि यहीं राह।
वैसे तो छोटे परिवार के होते बड़ फायदे,
यहां बनते हैं अपने नियम और अपने हिसाब के कायदे।
माता पिता और बच्चो के बीच रहता कुछ गहरा लगाव,
डांट फटकार के साथ मिलती हमेशा माता पिता की छांव।
उलझे रास्तों को जो सुलझाता हैं,
घर के आंगन की तुलसी को महकाता हैं,
लाख मुश्किलों पर भी,
जो न कदम पीछे हटाता हैं,
ऐसे ही रिश्तों का मिलनाा शायद परिवार कहलाता हैं।
कहते हैं घर में दीया तो मंदिर में दिया,
पत्नी बनकर आई एक बेटी ने,
हम मोतियों को एक माला में सीया।
हर पल सिखाया, त्याग व उपकार,
ऐसा हैं मेरा प्यारा परिवार।
अभिमान न करना,
छल न करना,
मन में अपन कपट कभी न लाना।
बड़ों ने घर इस तरह बनाया,
ज्यों चिड़िया चुगे एक एक दाना।
रिश्तों की डोर होती बड़ी नाज़ुक,
इसे परिवार के सदस्यों को प्यार से थमाना।
रूठों को मना लेना,
बहकों को समझा लेना,
ज़िद पर अड़ जाए अगर छोटू,
थोड़ा डांट फिर पुचकार लेना।
बेटी बनकर आई हो इस घर में,
बेटी ही रहोगी,
ढीला पड़ने लगे जा दामन मुझसे,
कसके तुम इसे थाम लेना।
रिश्ता खून का नहीं,
अपनेपन का होता हैं,
परिवार कहने से नहीं,
निभाने से होता हैं।
अनजानों की भीड़ में,
बेगानों से रिश्ता जोड़ लिया,
प्यार मिला इतना कि घर से दूर,
एक नया परिवार ढूंढ लिया।
नौबत यह है कि दुनिया हैरान सी रह जाती हैं,
किस तरह लोग रिश्तों को यूं ठग जाते हैं,
बिन ढकी आंखों से आंख मिचौली खेल जाते हैं।
दुख में साथ निभाना,
दर्द में आंसू पोंछ देना,
तुम ही सब कुछ हो उनके,
थोड़ी सीख तो थोड़ी माफी दे देना।
थक कर दूर जाने लगों, तो प्यार से तुम्हे बुलाते हैं,
परिवार के खट्ट–मीठे रिश्ते ताउम्र थोड़े सताते हैं।
भरा पूरा परिवार हो,
आपस में सब का प्यार हो,
मां–पिता का सिर पर हाथ हो,
परिवार में सब का साथ हों,
हर दिन खुशियों वाली बात हों,
हर रात दिवाली वाली रात हो,
भाई–बहन का साथ हो,
प्यार की बरसात हो,
परिवार सदा खुश रहें,
ऊपरवाले का आर्शीवाद हों।
साथी तुम अपनी पत्नी में ढूंढ लेना,
शुभचिंतक तुम अपनी बहन को सोच लेना,
लेनी हो कोई सलाह,
तो राह बाबा कि देख लेना,
लूटाना हो प्यार तो भाई पर लूटा देना,
कोई पूछे तुमसे तुम्हारी खुशी का राज,
तो कहानी अपने परिवार का सुना देना।

ना दादी से ना दादा से,
जो भी सीखा,
सीखा हमने अपन अम्मा–बाबा से।
जिन्होंने बड़ों के बिना चलाया घर बेहतरीन,
उनके बिना हम कैस सोचें कि हमारी दुनिया है रंगीन।
लोग कहते हैं यें संस्कार हमारी अच्छी परवरिश का फल हैं,
प्यारे माता–पिता की बदौलत ही तो संभव हमारा कल है।

Mr. Mohit
(TGT - Hindi)

एक कविता हर माँ के नाम

घुटनों से रेंगते – रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ,
काला टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा हैं,
मैं ही मैं हूँ हर जगह,
प्यार थे तेरा कैसा है ?
सीधा – साधा, भोला– भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा
"माँ" मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

प्रीति खन्ना
(पी.आरी.टी)